Notes

7 आध्यात्मिक विकास का उद्देश्य :- ज्ञान की प्रमुख आवश्यकता आध्यात्मिक विकास को के उद्देश्यो को पूर्ण करने से होती है। शिक्षा एवं ज्ञान के द्वारा बालक में आध्यात्मिक गुणो का विकास होता है। बालक अपने भावी जीवन को नैतिकता एवं मानवता के आधार पर आध्यात्मिक विकास को प्राप्त करने का प्रयास करता है।

8. बालो के सन्तुलित विकास के लिए :- बालों को सन्तुलित विकास के लिए यह आवश्यक होती है। उनको तीन प्रकार से ज्ञान प्राप्त करने से परिचय कराया जाता है। ज्ञान प्राप्त करने की इस प्रक्रिया में शारीरिक एवं मानसिक विकास सम्भव होता है। शारीरिक तथा मानसिक विकास ही बालो के सन्तुलित विकास का मार्ग प्रशस्त करता है।

9- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता के लिए- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के विकास के लिए बालों में अधिगम कौशल का विकास होना चाहिए। तथा शिक्षक को समस्त शिक्षण कौशल का ज्ञान होना चाहिए इस कार्य के शिक्षण कौशल के रूप में शिक्षकों प्रस्तावना कौशल, व्याख्यान कौशल श्यामपट्ट लेखन कौशल आदि। ज्ञान प्रमुख रूप से प्रदान किया जाता है।

10 समायोजन क्षमता के शिक्षण के लिए - समायोजन क्षमता के विकास के ज्ञान वरदान के रूप में सिद्ध होता है। क्योंकि ज्ञान के आधार पर बालक के शिक्षण व्यवहार

Notes

को प्रदर्शन करता है। वे अपने संवेगो पर नियन्त्रण करना सीखता हैं

उदाहरण - छात्र का मन कहानी सुनने का हो शिक्षक उसको पढ़ने का कार्य करता है। जो उसके मनोभावो के विपरीत हैं इसके पश्चात् भी छात्र कक्षा बैठकर अध्ययन करने का प्रयास करता है। क्यों की वह जानता है शिक्षक की आज्ञा का पालन करना चाहिए क्योंकि शिक्षक उसका आदर्श होता हैं। इस प्रकार प्रत्येक क्षेत्र में समायोजन क्षमता का विकास होता है।

अवकाश का सदुपयोग :- अवकाश के समय में छात्र अनेक प्रकार की गतिविधियों में मनोरंजन की दृष्टि से सम्पन्न करते है। जिसमें उनके ज्ञान में वृद्धि होती है। तथा उसका मनोरंजन भी होता है।

जैसे - मनोरंजन के रूप में टेबिल टेनिस, क्रिकेट या वालीवाल खेल, सीखाये जा सकते हैं खाली समय में छात्रो को स्वाध्याय करने के प्रेरित किया जाता हैं। अनेक प्रकार की कहानियां पढ़ाई जाती है। जिससे उनको ज्ञान के साथ - साथ गुणो का विकास होता है।

समाजिक गुणो के विकास के लिए - ज्ञान के माध्यम से छात्रो को समाजिक गुणो का विकाश किया जाता है। जिसमे विधालय एवं समुदायिक कार्यक्रमों में जिनमें भी समाज की सहभागिता होती हैं। छात्रो द्वारा सहयोग दिया जाता है। इस प्रकार के कार्यक्रमो को देखकर उसमे भाग लेकर समाजिक गुणो का विकाश होता है जैसे- प्रेम, सहयोग, कर्तव्य निष्ठा आदि

Notes

ज्ञान के पक्ष :-

(Aspects of Knowledge)

ज्ञान को मानव जीवन ~~एक~~ विद्यार्थी जीवन में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया आज का प्रत्येक बुद्धिजीवी वर्ग का व्यक्ति ज्ञान प्राप्ति हेतु प्रयास रत है। ज्ञान प्राप्ति हेतु किया गया प्रयास मानव को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से लाभ पहुचाता है। ज्ञान मानव जीवन को विकासित करने, समाज को उन्नत करने तथा राष्ट्र के विकास की ओर अग्रसित करने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

ज्ञान के पक्षो ज्ञान के कार्यो के रूप में निम्नलिखित प्रकार से ~~व्यक्ति~~ प्रयास किया जाता है।

1- ज्ञान के व्यक्ति सम्बन्धी पक्ष
2- ज्ञान के समाज सम्बन्धी पक्ष
3- ज्ञान के राष्ट्र सम्बन्धी पक्ष
4- ज्ञान के वातावरण सम्बन्धी पक्ष।

1- ज्ञान के व्यक्ति सम्बन्धी पक्ष

Individual Related Aspects of Knowledge

व्यक्ति से आशय छात्र, शिक्षक एवं सभी सामान्य व्यक्तियो से है। जिनके विकास के ज्ञान द्वारा किया जाते हैं।

1- अतिरिक्त शक्तियों का विकास :- ज्ञान का प्रमुख कार्य छात्रो की में छिपी अनेक प्रकार की आन्तरिक प्रतिभाओं का विकास करना जिसके द्वारा स्वयं छात्र का, समाज एवं राष्ट्र का भला हो सकता है।

Notes

जैसे- संगीत की प्रतिभा, नृत्य की प्रतिभा एवं वाद विवाद की प्रतिभा आदि।

२- व्यक्ति सम्बन्धी कार्य:- छात्र के व्यक्तित्व के निर्माण में विद्यालयी व्यवस्था सम्बन्धी तथ्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विद्यालय में कौशलात्मक परिचयात्मक ज्ञान के माध्यम से छात्रों के विकास का मार्ग प्रशस्त होता है।

३- भावी जीवन सम्बन्धी कार्य- अपने भावी जीवन को उच्च स्तरीय एवं सुखद बनाने के लिए ज्ञान को प्राप्त होना अति आवश्यक है। ज्ञान प्राप्त करने से भावी जीवन सुखद हो सकता है ~~जैसे~~-

४- नैतिकता के विकास सम्बन्धी कार्य:- छात्रों में नैतिकता के विकास सम्बन्धी कार्यों को परिचयात्मक ज्ञान एवं तथ्यात्मक ज्ञान द्वारा सम्पन्न किया जाता है। जब कोई छात्र विद्यालय में अपने शिक्षक एवं अन्य छात्रों को किसी दूसरे छात्र या व्यक्ति की सहायता करते हुए देखता है। तथा सत्य आचरण करते हैं तो उनमें नैतिकता की भावना का विकास होता है।

मानवीय गुणों के विकास सम्बन्धी कार्य:- ज्ञान के द्वारा छात्रों में मानवीय गुणों का विकास सम्भव होता है। इस कार्य में भी प्रमुख रूप से तथ्यात्मक ज्ञान एवं परिचयात्मक ज्ञान का सहयोग होता है। छात्र एक विद्यालय में अनेक प्रकार की क्रियाओं को समूह में रहकर करता है।

Notes

जैसे पाठ्यक्रम सहभागी क्रियाएँ एवं खेल आदि।

आवश्यकता पूर्ति सम्बन्धी कार्य — ज्ञान का प्रमुख कार्य मानव तथा समाज की आवश्यकता की पूर्ति करना प्रत्येक व्यक्ति समाज मे ज्ञान के माध्यम से अपनी आवश्यकता की पूर्ति ~~करना~~ के साथ- साथ समाज की आवश्यकता पूर्ति का कार्य भी करता हैं।

जैसे एक शिक्षक शिक्षण कला मे प्रवीण है। इससे वह अपनी जीविकोपार्जन के लिए धन प्राप्त करता हैं। तथा कला की माध्यम से छात्रो को शिक्षण करता हैं।

रोजगार सम्बन्धी कार्य — ज्ञान के माध्यम से छात्रो में रोजगार की उपलब्धता का प्रशस्त होता है। शिक्षक द्वारा विद्यालय मे छात्रो की प्रतिभाओं एवं योग्यताओ के अनुसार मार्ग दर्शन किया जाता है।

जैसे - एक छात्र चिकित्सा के क्षेत्र मे रुचि दिखाता है तो उसको जीव विज्ञान का ज्ञान करने के लिये प्रेरित किया जाता हैं।

(2) ज्ञान के समाज सम्बन्धी पक्ष → विद्यालय एवं समाज का सम्बन्ध पूर्णतः घनिष्ठ होता है। विद्यालय मे जो भी ज्ञान सम्बन्धी क्रियायें होती हैं। उनका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से समाज पर प्रभाव पड़ता हैं।

(3) सामाजिक नियम सम्बन्धी कार्य → समाज में योग्य एवं अनुभवी व्यक्तियो द्वारा ~~बनाये~~